जावेद आलम

प्रस्तुति : गीत चतुर्वेदी

शायरी अपने कमरे में सो जाएगी

उप–महाद्वीप के अज़ीम शायर ज़ीशान साहिल का जाना...

ज़ीशान साहिल पाकिस्तान के महत्वपूर्ण कवि थे। अफ़ज़ाल अहमद सय्यद (जिनकी कविताओं की पुस्तिका 'पहल' ने 'शायरी मेंने ईजाद की' शीर्षक से प्रकाशित की थी), ज़ीशान, सईदुद्दीन, सारा शगुफ्ता ये लगभग एक ही पीढ़ी के कवि थे, जो पाकिस्तान की उर्दू शायरी में बड़े बदलाव ले आए। 15 दिसम्बर 1961 को हैदराबाद, सिंध में जन्मे ज़ीशान साहिल ने 1977 में कविताएं लिखनी शुरू की थीं। पोलियो से पैर ख़राब हो जाने और काइफोस्कोलियोसिस नामक रोग के कारण वह पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए। यह रीढ़ की हड्डी से संबंधित विकार होता है, जिस कारण व्यक्ति के कूबड़ निकल आता है। इस रोग के कारण ज़िंदगी का बड़ा हिस्सा उन्होंने व्हील चेयर पर गुज़ारा। सन् 2000 में वह कराची आ गए। 1994–95 में जब कराची आतंकवाद की चपेट में था, सरकारी दमनचक्र भी तेज़ था, तब ज़ीशान ने उन्हीं पर केंद्रित कुछ कविताएं लिखीं, जो तुरंत ही 'कराची और दूसरी नज़्में' संग्रह के रूप में प्रकाशित हुईं। इस संग्रह ने ज़ीशान को दुनिया की कई भाषाओं में पहुंचा दिया। वह करुणा, मनुष्यता और प्रतिरोध के कवि थे। उनकी कविता की सात किताबें छप चुकी हैं। पिछले दिनों वह अपने पहले उपन्यास की रूपरेखा बना रहे थे। इसी साल फरवरी में फ़ोन पर ज़ीशान से मैंने बात की थी और चाहा था कि 'पहल' के लिए फोन पर उनसे एक इंटरव्यू किया जा सके। वह तैयार थे, लेकिन उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। हमने तय किया कि कुछ दिनों बात बातचीत करेंगे, पर उनकी तबीयत बिगड़ रही थी। कभी मैं भी फ़ितरत और मसरूफ़ियत में टाल जाता। सवाल बने पड़े थे, बस जवाब और जवाब देने लायक़ सेहत का इंतज़ार था। पर सांस की दिक़्क़त के कारण कराची में 12 अप्रैल को उनका इंतक़ाल हो गया। यहां ज़ीशान का आत्मकथ्य दिया गया है, जो 'डान', 'जंग' और 'बीबीसी उर्दू' में प्रकाशित टुकड़ों को संयोजित कर बनाया गया है।

कवि होने का अहसास

अगर मैं कविता नहीं लिखता, तो ज़िंदगी में कुछ नहीं कर पाता। कविता लिखना मेरी आदत या शौक़ नहीं, मेरी निजी ज़रूरत है। शायद दस या बारह की उम्र से मैं छोटे-छोटे टुकड़े लिखने लगा था। उनमें से

ज़्यादातर शायरी ही होती थी। मैंने कभी स्कूली पढ़ाई पर ध्यान नहीं दिया, न ही बड़े होने के बाद पैसे कमाने पर। इसका कई बार अफ़सोस भी होता है, लेकिन मैं एक कवि हूं, यह अहसास भी मुझे बेइंतहा ख़ुशी देता है।

मेरी विकलांगता

इस बारे में कई लोग मुझसे सवाल करते हैं। जिन्होंने नहीं देखा मुझे, देखकर चौंक जाते हैं। मैंने अपने ज़िंदगी का बड़ा हिस्सा हैदराबाद में गुज़ारा। वहीं पैदा हुआ, पढ़ाई-लिखाई वहीं, बचपन-जवानी वहीं। जिस मोहल्ले में मैं रहता था, उससे बहुत प्यार करता हूं मैं। वहां भी बहुत दोस्त थे मेरे, पर किसी ने कभी मुझे यह अहसास नहीं कराया कि मैं विकलांग हूं या उन लोगों जैसा नहीं हूं। मैं एक सामान्य स्कूल में गया। सामान्य लोगों की तरह पढ़ा। हां, एक बात का अफ़सोस है मुझे, इसके कारण मैं उच्च शिक्षा नहीं हासिल कर पाया। जवानी में मेरा बदन फिर भी थोड़ा मज़बूत था। 1981 में जब अब्बा मरे, तब भी। दस साल बाद अम्मी का इंतक़ाल हुआ। वह मेरे लिए बहुत बड़ा झटका था। मैं निराश हो गया और लगातार कमज़ोर पड़ने लगा। अब भी मैं कई बार निराश हो जाता हूं जीवन से, दूसरों पर आश्रित होने के कारण, पर मेरी कविता, दोस्त और परिवार के सदस्य मुझे संभाल लेते हैं।

पढ़ने की शुरुआत

इसकी आदत विरासत में मिली। अब्बा हैदराबाद में एक छोटी-सी सरकारी लाइब्रेरी में इंचार्ज थे। वह ख़ूब पढ़ा करते थे। पढ़कर गोष्ठियां करवाते थे। उन्होंने मुझे कहा था - बेटा, किताबों और इंसानों से एक-सी मुहब्बत करना। कोई भी इंसान छोटा या बड़ा नहीं होता। मेरी पूरी शायरी का आधार अब्बा की वे बातें हैं।

मेरी शायरी

शुरुआत से ही परिवार और दोस्तों की तरफ़ से मुझे हौसला मिला। मेरा लिखा वे सुनते थे और प्रोत्साहित करते थे। मुरी ख़ुशक़िस्मती है कि जल्द ही मेरी मुलाक़ात मशहूर कवि सरवत हुसैन से हो गई। उन्होंने मुझसे कहा कि ये मुस्तफ़ा ज़ैदी टाइप के शेरो-ग़ज़ल कहना बंद करो और आज के समय की कविताएं लिखो। उन्होंने कराची की सांस्कृतिक दुनिया के दरवाज़े मेरे लिए खोल दिए। यहां कई दोस्त बने- फ़हमीदा रियाज़, असद मुहम्मद ख़ान, ख़ालिद अख़्तर, अफ़ज़ाल सय्यद, अजमल कमाल, ज़ीनत हिसाम और रफ़ीक़ नक़्श। इन्होंने इतना प्यार दिया कि मैं बिगड़ गया और आज के दौर का शायर बन गया।

कविता कैसे आती है?

मुझे सपने देखना और घूमना बहुत पसंद है। बाहर की दुनिया और लोग मुझे कविता लिखने के लिए प्रेरित करते हैं। कविता एक बहुत निजी कोशिश होती है। जब कोई कविता मेरे दिल में आती है, तो उस कोशिश की शुरुआत होती है। फिर कविता ख़ुद-ब-ख़ुद शब्द-दर-शब्द आकार लेती है। जैसे-जैसे वह काग़ज़ पर उतरती है, जाने-अनजाने अनगिनत लोग उस कविता में शामिल होने लगते हैं। लेकिन उनके शामिल होने के बाद भी कवि अंततः यही मानता है कि यह मेरी अकेले की कविता है।

संगीत मेरी रूह में

कहा जाता है कि मेरी लाइनें बहुत सीधी होती हैं। पर उनमें संगीत भी होता है। संगीत मेरी रूह में

बसा हुआ है। एक समय मैं सिर्फ़ संगीत ही सुनता था, जब पढ़ता ज़्यादा हूं। मेरी पसंदीदा गायक हैं स्टिंग, चेरिल क्रो, फिल कॉलिन्स, हेमंत कुमार और एस.डी. बर्मन। मैडोना के भी कुछ गाने अच्छे लगते हैं।

कविता से ज़्यादा कहानी पसंद

दुनिया-भर की कविताएं पढ़ता हूं, पर मुझे महमूद दरवेश, पाब्लो नेरूदा और पोलिश कवि तादेयूश रोज़ेविच बहुत पसंद हैं। कहानी-उपन्यास पढ़ना मुझे कविता से ज़्यादा अच्छा लगता है। मेरे पसंदीदा गद्यकार हैं -इतालो कैल्विनो, बोर्ख़ेस, हेनरिक बोल और गैब्रिएल गार्सीया मारकेस। पिको आयर की 'फॉलिंग ऑफ द मैप' मेरी पसंदीदा किताब है। मुहम्मद ख़ालिद अख़्तर की 'खोया हुआ उफ़क़' और असद मुहम्मद ख़ान की 'बसोड़े की मरियम' मेरी पसंदीदा कहानियां हैं।

नाज़ुक रूह था ज़ीशान

ज़ीनत हिसाम की डायरी के अंश

कराची में रहने वाली ज़ीनत हिसाम पाकिस्तान की मशहूर लेखिका और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। वह ज़ीशान की क़रीबी दोस्त भी थीं। ज़ीशान कई-कई दिनों तक ज़ीनत और उनके पूर्व पति अजमल कमाल के घर रहते थे। 'कराची' सीरिज की कई कविताएं उन्होंने यहीं लिखी थीं। ज़ीनत की डायरी से कुछ टुकड़े यहां प्रस्तुत हैं :

ज़ीशान एक शायर है। एक नाज़ुक-सी रूह। सपनों की धुंध उसकी आंखों में गहरे तक दिखती है। स्वभाव से बेहद शांत। जब वह हमारे यहां रहता है, तो पढ़ता है, या कविताएं लिखता है या नुदरत के साथ खेलता है। नुदरत मेरी बेटी है। वह उसके साथ घंटों खेल सकता है। वे एक-दूसरे को कहानियां सुनाते हैं, ब्लॉक्स, टॉय ट्रेन, बियर्स, डॉल के साथ खेलते हैं। वे चित्र बनाते हैं। नंबर लिखते हैं। फिर लड़ पड़ते हैं। जब ज़ीशान बच्चों की अपनी दुनिया से निकल वापस वयस्क बनना चाहता है, नुदरत उससे चिपट जाती है- 'मेरे साथ खेलो, मेरे साथ खेलो' कहते हुए। पर आज नुदरत फ़र्श पर अकेले बैठकर खेल रही है और ज़ीशान डाइनिंग टेबल पर नुदरत की पेंसिल से एक काग़ज़ पर कुछ लिख रहा है। थोड़ी देर बात वह कहता है, 'मैंने नुदरतके लिए एक नज़्म लिखी है...'। वह फिर नुदरत के साथ खेलने लगता है। मैं दौड़कर उसके पास जाती हूं। नज़्म पढ़ती हूं। कई बार। नुदरत के लिए उसने दूसरी बार नज़्म लिखी है। मैं तुरंत उसे अजमल को दिखाती हूं। वह स्टडी में हैं। ज़ीशान कहता है, 'बहुत दिनों बाद कविता मेरे पास लौटकर आई है।' उसकी आंखों में एक मासूम चमक है।

* * *

एक दिन वह कहता है, 'तुम्हें मेरी अम्मी से ज़रूर मिलना चाहिए था।' उसकी आंखें नम हैं। मुझे पता है, अम्मी के जाने के बाद से वह बहुत कमज़ोर महसूस करता है। मैंने उससे कई बार पूछना चाहा है कि अम्मी ने कैसे उसे इतनी अंदरूनी ताक़त दी थी। वह अपने बारे में कुछ चीज़ें बताता है।

'मेरे अब्बा ने दो ज़िंदगियां जी थीं। एक पार्टीशन से पहले, एक उसके बाद में। वह पुलिस में थे। देहरादून में। 19 साल की सर्विस थी उनकी। पार्टीशन के समय उनके एक सीनियर ने एक पठान औरत को किडनैप कर लिया। अब्बा ने विरोध किया, तो उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया। फिर भी वह उसी शहर में रुके रहे। एक दिन मौक़ा पाकर उन्होंने उस पठान औरत को छुड़ा लिया और उसे उसके परिवार तक छोड़ने पाकिस्तान चले आए।'

दो ज़िंदगियां? ज़मीन छूटने पर ज़िंदगी भी बदल जाती है? 'यहां आकर वह पूरी तरह बदल गए थे। बस पढ़ते रहते थे। उन्होंने सरकार से कोई क्लेम नहीं किया। एक लाइब्रेरी में नौकरी मिल गई। ज़िंदगी-भर पढ़ते रहे।'

फिर उस औरत का क्या हुआ था? 'अब्बा ने उससे शादी कर ली थी। किसी को भी नहीं पता था। मेरी अम्मी कानपुर में ससुराल में रहती थीं। अब्बा के आने के पांच साल बाद वह पाकिस्तान आईं। दो बच्चों के साथ। मेरा तो जन्म यहीं हुआ था, पार्टीशन के काफ़ी समय बाद। फिर अब्बा हमारी अम्मी के पास रहने आ गए। बहुत समय बाद हमें उनकी दूसरी बीवी के बारे में पता चला। हम सब हैरत में थे। फिर भी बूढ़े हो गए अब्बू को लेकर हम नौशेरा गए, मेरी सौतेली मां से मिलने। वहां पहुंचकर पता लगा, कुछ ही दिनों पहले उनका इंतक़ाल हो गया। इसके दो साल बाद अब्बू भी चल बसे। अब्बू हमेशा पढ़ते-लिखते थे, सो अम्मी ने ही हमें संभाला। वह हमेशा हिंदुस्तान के बारे में बात करती थीं। अपने संघर्षों के बारे में। वही बातें मुझे ताक़त देती थीं।'

* * *

उन दिनों ज़ीशान हमारे यहां ही रहता था। 1995 था। कराची जल रहा था। लोग उन्मादी हो गए थे। चारों ओर हिंसा थी। मासूम ज़िंदगियों, सपनों और उम्मीदों को सरेराह मारा जा रहा था। कुछ ही दिनों में दो हज़ार लोग मारे गए थे। हम सबकी तरह ज़ीशान भी बहुत दुखी था। वह एक कमरे में लिखने बैठ गया। दो महीने लगातार। दिन-रात। वह रुक ही नहीं रहा था। किसी जुनून में था। जब उसने लेखन पूरा किया, तो सबकी जान में जान आई। हम उसके इस व्यवहार से बहुत घबरा गए थे। जुम्मे के दिन घर में बहुत दोस्त आए थे। ज़ीशान ने इन्हीं दिनों लिखी अपनी नज़्में सुनाईं। वे बहुत भीतर तक हम सबमें धंस गईं। अजमल तुरंत कंप्यूटर पर बैठ गए। सारी कविताएं टाइप कर डालीं। सिर्फ़ दो महीने में 'कराची और दूसरी नज़्में' तैयार हो गई। पर क्या कराची को इससे कोई फ़र्क़ पड़ा? पागलपन का शहर, उपद्रव का शहर॥

ज़ीशान साहिल की नज़्में

काली चिड़िया

पिंजरा ख़ाली था
और तुम्हारी खिड़की में रखा हुआ गुलदान
फूलों से भर चुका था

किताबों की दुकान में
नज़्मों की नई किताब आ चुकी थी

और स्टेशन पर ट्रेन
कहीं जाने के लिए तैयार खड़ी थी

पिंजरा ख़ाली था
और काली चिड़िया
ट्रेन के आगे-आगे उड़ रही थी

एक सुरंग से आगे निकलते ही
इंजन ने चीख मारी
मैंने खिड़की से बाहर देखा

ख़ाब मेरी आंखों में घर बना चुके थे
और पिंजरा ख़ाली था

मुझसे बाहर

मुझसे बाहर एक जंगल है
जहां पत्तों के गिरने के लिए
कोई ख़ास धुन मुकर्रर नहीं
जहां हवा चलने पर
दरख़्त एक-दूसरे से बातें नहीं कर सकते
जहां तेज़ आवाज़ वाले परिंदे
और गहरी रंगत वाले फूल बहुत कम हैं

मुझसे बाहर एक जंगल है
जहां हर शाम
मैं दरख़्तों के दरम्यान
धूप को आख़िरी बार देखता हूं
और बाहर निकल जाता हूं

आप

आप क्या करते हैं?
मैं दरख़्त लगाता हूं
हर रात एक नया दरख़्त
सुबह होने तक आसमान से
जा लगता है
मेरा दरख़्त

अब तक तो जंगल बन गया होगा?
हां कई जंगल
सबके सब आसमान से मिले हुए
लेकिन किसी में धूप नहीं होती

और जानवर? और परिंदे?
वो क्या करते हैं?
सब हैं, बैठे रहते हैं
एक ही दरख़्त के नीचे
जो मैंने सबसे पहले लगाया था

और आप कहां रहते हैं?
मैं उसी दरख़्त के अंदर

यह आसमान है

यह आसमान है
और यह मेरे आंसू
मैं आसमान को देखता हूं
और नज़्म लिखता हूं
मैं आसमान को देखता हूं
और मोहब्बत करता हूं
मैं आसमान को देखता हूं
और उदास नहीं होता
आसमान मेरे आंसुओं को
हवा से ख़ुश्क़ नहीं करता
आसमान मेरे आंसुओं को
छोटे-चोटे बादल नहीं बनाता
आसमान मेरे आंसू
सितारों तक नहीं ले जाता
मैं अपने आंसुओं से
नरगिस के फूल बनाऊंगा
मैं अपने आंसुओं से
एक सीढ़ी बनाऊंगा
मैं हमेशा के लिए आसमान को
अपने एक आंसू में बंद कर लूंगा

नज़्म –1

पहली बार
सितारा बनना
दूसरी बार बिखर जाना

पहली बार
ठहरना दिल में
दूसरी बार गुज़र जाना

पहली बार
उसे ख़त लिखना
दूसरी बार जला देना

पहली बार
मोहब्बत करना
दूसरी बार भुला देना

नज़्म 2

देखते–देखते
सोचते–सोचते
दिन गुज़र जाएगा

देखते–देखते
रात हो जाएगी

शायरी अपने कमरे में
सो जाएगी

ज़िंदगी अपने रस्ते पे
खो जाएगी

जहाज़

हमेशा हैरान कर देने वाली
एक लड़की को लेकर
आने वाला जहाज़
उसे अपने अंदर समो के
कितनी ख़ुशी होती है जहाज़ को

वो लफ़्ज़ों में बयान नहीं कर सकता
एयरपोर्ट से बाहर जाकर
शहर में खो जाएगी यह लड़की
सोचता है जहाज़ और बार-बार
आसमान के चक्कर
लगाने लगता है
ज़मीन को छूने से पहले
बादलों में छुपने की
कोशिश करता है
अगर मैं दोबारा उसके घर के ऊपर से गुज़रा
तो क्या पहचान पाएगी मुझे?
सोचता है जहाज़
और आदमी की तरह
दुखी होने लगता है
आंसू नहीं निकल सकते उसके
अपने परों को आंखों पर नहीं रख सकता
साइंस कहती है
मशीन होता है जहाज़
मोहब्बत नहीं कर सकता
सुनता है जहाज़
और बेकरार होकर
फिर से उड़ जाता है

एक आदमी

हर रोज़
अपने अधूरे ख़्वाबों से
बाहर निकलने पर
अख़बार और चाय की प्याली मिलने के बाद
एक आदमी
शुरू होने वाले दिन के बारे में
सोचता है

कल शाम तक शहर में
कितने लोग मारे गए?
वो उन्हें नहीं जानता
वो डॉक्टर, हॉकी का खिलाड़ी,
सियासी कारकून, दूध वाला
और पता नहीं कौन-कौन

एक आदमी ज़्यादा तफसील में नहीं जाता
अपनी तवज्जो शहर के हालात से किसी और तरफ़ हटाने के लिए
वो टीवी खोलता है
स्क्रीन पर इज़राइली पुलिस
फिलिस्तीनी औरतों को सड़क पर
घसीटती लिए जा रही है
सराइवो के शहरी
बख़्तरबंद गाड़ियों की मदद से
सड़क पार करते हैं

मैं उनसे ज़्यादा ख़ुशक़िस्मत हूं
एक आदमी सोचता है और
फिर टीवी देखने लगता है
माइकल जैक्सन का अलबम
रिलीज़ हो गया है
इस ख़ुशी में एक आदमी
टीवी बंद करके
पुराने गीत गाने लगता है

आज उसे कहां जाना है
वो भूल जाता है
काम पर
दोस्तों के पास
या अपनी महबूबा से मिलने
एक आदमी हमेशा किए जाने वाले
वादों के बारे में सोचता है
और उनके पूरा न होने के ख़्याल से
डर जाता है

वो बाहर देखता है
शहर को जाने वाला रास्ता वीरान पड़ा है
पुल पर सन्नाटा है
अचानक कहीं से
फायरिंग की आवाज़ आने लगती है
एक आदमी अपनी दुनिया में लौट आता है
अपने अधूरे ख़ाबों को
फिरसे जोड़ता है

उर्दू से लिप्यंतरण :जावेद आलम